



सेंट ज़ेवियर्स महाविद्यालय
म्हापसा - गोवा

हिंदी विभाग

बढ़ते कठुल...

(अंक - 8)



हिंदी विभाग

2024-25



डॉ. रमिता गुरव
विभागाध्यक्ष



डॉ. मैग्डलीन डिसूजा



प्रा. सलीम गडे



प्रा. प्रितम साळगांवकर



प्रा. क्षितिजा पेडणेकर

संपादक मंडल



प्रा. क्षितिजा पेडणेकर
संपादक



कु. सादिया चुडिगर



कु. सबा अंसारी

विद्यार्थी प्रतिनिधि

प्रा. अर्सला बर्रटो (प्रभारी प्राचार्य)



हिंदी विभाग को विभागीय ई- पत्रिका 'बढ़ते क़दम' के आठवें अंक के विमोचन पर बधाई। विभाग के विद्यार्थियों ने अपने संकाय सदस्यों के मार्गदर्शन में अपनी रचनात्मक और साहित्यिक प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। मैं इस सुंदर प्रकाशन के लिए संपादक प्रा. क्षितिजा पेडणेकर और पूरे संपादकीय मंडल को अपनी शुभकामनाएँ देती हूँ। हिंदी विभाग विद्यार्थियों के हित में वर्ष भर अनेक गतिविधियाँ आयोजित करता है। विभागाध्यक्ष और संकाय सदस्यों द्वारा सभी के लिए शिक्षण-अधिगम अनुभव को समृद्ध बनाने के लिए किए गए सभी प्रयासों के लिए हार्दिक आभार।

हिंदी दिवस मनाते हुए, आइए हम अपनी राष्ट्रभाषा की समृद्ध विरासत और सांस्कृतिक महत्व का सम्मान करें। आइए हम हिंदी साहित्य की गहराइयों का अन्वेषण करते रहें, नवीन शोध तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसके प्रयोग को बढ़ावा दें।

मैं इस विशेष दिन पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

फा. आंतोनियो सालोमा (प्रशासक)



हमारे संस्थान में मनाए जा रहे 'हिंदी दिवस' के अवसर पर यह संदेश लिखते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस वर्ष के उत्सव का चुना गया विषय 'एकता' आज के समय के लिए पूर्णतः उपयुक्त है। भारत विभिन्न भाषाओं का केंद्र है, जिन्होंने हमारी संस्कृति, साहित्य और कला को समृद्ध किया है, और जिनमें से कुछ शायद पश्चिमी कला रूपों से भी अधिक प्राचीन हैं।

प्रत्येक राज्य की अपनी मातृभाषा होने के बावजूद, भारतीय हिंदी और अंग्रेजी। इन दो भाषाओं के माध्यम से एकजुट रहे हैं। यही एकता स्वतंत्रता आंदोलन के समय हमारे लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई। हाल ही में, हम हिंदी में बढ़ती रुचि देख रहे हैं, जिसका श्रेय आंशिक रूप से हिंदी सिनेमा और उसके गीतों की मनमोहक धुनों को जाता है। यह प्रवृत्ति शुभ संकेत है, क्योंकि यह देशवासियों में गहरी आत्मीयता और गर्व की भावना उत्पन्न कर सकती है। साथ ही, सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रयास ऐसे हों, जिनसे किसी भी क्षेत्रीय भाषा या समुदाय में नकारात्मक भावनाएँ उत्पन्न न हों जैसा कि हाल ही में महाराष्ट्र और तमिलनाडु में देखा गया। मैं विभागाध्यक्ष डॉ. रमिता गुरुव के कुशल नेतृत्व तथा संकाय और अन्य कर्मचारियों के सहयोग से हिंदी विभाग द्वारा भाषा के संवर्धन हेतु उठाए गए सभी सराहनीय कदमों के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं छात्रों को भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्राप्त पुरस्कारों के लिए अभिनंदन देता हूँ, जिनसे उनके विभाग और महाविद्यालय का गौरव बढ़ा है।

ईश्वर सभी पर अपनी कृपा बनाए रखें, यही मेरी शुभकामना है।

डॉ. रमिता गुरव (विभागाध्यक्ष)



विविध भाषाओं से भरे हमारे देश में हिंदी सभी देशवासियों को एक सूत्र में बाँधने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। सेंट ज़ोवियर्स महाविद्यालय में भी अनेक भाषाएँ बोलनेवाले विद्यार्थी हैं। हिंदी विभाग अपने विविध उपक्रमों द्वारा इन विद्यार्थियों को एक मंच पर लाने का प्रयास करते हुए हिंदी के प्रति उनमें प्रेम बढ़ाने की दिशा में प्रयासरत रहता है। पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों की पढ़ाई के साथ-साथ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में तथा उनमें अनेक कौशल विकसित करने में इस प्रकार की गतिविधियाँ अहम् भूमिका निभाती हैं। ‘बढ़ते कदम’ के इस अंक में हिंदी विभाग की ऐसी ही गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की गई है। संपादिका कु.क्षितिजा पेडणेकर और हमारे विद्यार्थी कु.सबा अंसारी, कु.सादिया चूड़ीगर को इस अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं हार्दिक बधाई देना चाहती हूँ।

संपादकीय

‘बढ़ते क़दम’ हमारे हिंदी विभाग की वार्षिक ई-पत्रिका है, जिसमें पूरे शैक्षणिक वर्ष की विविध गतिविधियों का संक्षिप्त और सुव्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया जाता है। इस वर्ष हम ‘बढ़ते क़दम’ का आठवाँ अंक प्रकाशित कर रहे हैं। इस अंक का संपादन करने का अवसर प्राप्त होना मेरे लिए अत्यंत गौरव और प्रसन्नता का विषय है। इस अंक का विशेष आकर्षण यह है कि इसमें न केवल विभागीय गतिविधियों का सार संग्रहित है, बल्कि विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा, लेखन कौशल और हिंदी भाषा के प्रति उनके प्रेम की झलक भी मिलती है। हमने इस बार विशेष प्रयास किया है कि पाठक केवल जानकारी न प्राप्त करें, बल्कि इस अंक के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य से आत्मीय जुड़ाव महसूस करें।

इस वर्ष राष्ट्रीय हिंदी दिवस का विषय ‘राष्ट्रीय एकता और वैश्विक पहचान की ताकत’ है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की आवाज़ है। यह हमें विविधता में एकता का भाव सिखाती है और भारत की सांस्कृतिक विरासत को विश्व पटल पर स्थापित करती है। आशा है कि यह अंक आपके मन में हिंदी के प्रति गर्व और प्रेम का भाव जागृत करेगा तथा आपको इसके संवर्धन और प्रसार के लिए प्रेरित करेगा।

इस अवसर पर मैं महाविद्यालय के प्राचार्य एवं प्रशासक के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। जिनका दूरदर्शी मार्गदर्शन और निरंतर सहयोग ही विभाग को नई योजनाओं को क्रियान्वित करने तथा नई ऊँचाइयों तक ले जाने में सहायक रहा है। मैं, विभागाध्यक्ष डॉ. रमिता गुरव, सहयोगी प्राध्यापिका डॉ. मैगडालीन डिसूजा एवं सहायक प्राध्यापक सलीम गडेद का भी हार्दिक धन्यवाद करती हूँ, जो समय-समय पर न केवल रचनात्मक सुझाव देते हैं बल्कि आज उनके सहयोग से ही यह अंक संभव हो सका। अंत में, मैं तृतीय वर्ष की छात्राएँ कु. सबा अंसारी, कु.सादिया चूड़ीगर के प्रति विशेष कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने अनुवाद कार्य में अपने महत्वपूर्ण योगदान से इस अंक को और अधिक समृद्ध बनाया।

प्रा. क्षितिजा पेडणेकर
संपादक

विभागीय गतिविधियाँ

2024-25



"निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के,
मिटत न हिय को सूल "

- भारतेंदु हरिश्चंद्र

1.तुलसीदास और प्रेमचंद दिवस (1 अगस्त 2024)

हिंदी विभाग द्वारा 01 अगस्त 2024 को प्रातः 11:45 बजे 'तुलसीदास और प्रेमचंद दिवस' मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्रशासक फा. आंतोनियो सलेमा थे। कार्यक्रम की शुरुआत में, फादर एंटोनियो सलेमा ने तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा बनाए गए भित्तिपत्र का विमोचन किया। तुलसीदास और प्रेमचंद के साहित्य पर आधारित एक प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रेमचंद की लघु कथा 'कफन' पर आधारित एक टेलीफिल्म का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में कुल 100 छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन सहायक प्राध्यापक प्रीतम सालगांवकर ने किया।



2. देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता (14 अगस्त 2024)

हिंदी विभाग ने भारत के 78वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 14 अगस्त 2024 को सुबह 11:45 बजे 'भारत तुझे सलाम...' गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता के लिए मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय की प्राचार्य प्रा. अर्सला बर्टो उपस्थित थी। सभी प्रतिभागियों ने मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं जिससे दर्शकों में देशभक्ति की भावना जागृत हुई। इस प्रतियोगिता का संयोजन हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक सलीम गडेद ने किया। गायन प्रतियोगिता में कुल 42 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं:

एकल गायन

1. मानसी मांट्रेकर (FYBA)
2. श्रेता गवस (SYBIOTECH)
3. गंदिता नार्वेकर (TYBA)



समूह गायन

1. खुशी मांट्रेकर एवं समूह(FYBA)
2. श्रुति मेत्रे एवं समूह(TYBA)



३. 'सर्प जागरूकता' पर अतिथि व्याख्यान (३० अगस्त २०२४)

हिंदी विभाग ने 'ग्रीन इनिशिएटिव्स' और 'पर्यावरण निगरानी प्रकोष्ठ' के सहयोग से ३० अगस्त २०२४ को सुबह ११:४५ बजे महाविद्यालय के सभागार में श्री अमृत सिंह (पशु बचाव दल, वन विभाग, गोवा सरकार के अध्यक्ष) द्वारा 'सर्प जागरूकता' पर एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। श्री अमृत सिंह ने पर्यावरण के लिए साँपों के महत्व और मनुष्यों के साथ उनके संबंधों पर प्रकाश डाला। श्री अमृत सिंह ने बताया कि कैसे साँप पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं और उनका जीवन चक्र मानव जीवन और प्राकृतिक परिवेश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने साँप के काटने के बाद अपनाए जाने वाले सुरक्षा उपायों पर भी बात की, साथ ही साँपों से जुड़े मिथकों और तथ्यों पर भी बात की। यह जानकारी विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण थी जो वन्यजीवन और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में रुचि रखते हैं। इस व्याख्यान का संयोजन प्रा. सलीम गडेद ने किया।



४. हिंदी दिवस समारोह (24 सितंबर 2024)

24 सितंबर 2024 को सुबह 09:30 बजे, महाविद्यालय में हिंदी विभाग द्वारा 'हिंदी दिवस समारोह' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य हिंदी के बारे में जागरूकता और भाषा पर गर्व पैदा करना था। महाविद्यालय की प्राचार्य, प्रा. अर्सला बर्रेटो इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। छात्रों के लिए अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे- कविता प्रस्तुतिकरण, कहानी लेखन, निबंध लेखन, ग़ज़ल गायन, एकालाप, रेखाचित्र, वक्तृत्व। हिंदी विभाग के ई-समाचार पत्र 'बढ़ते कदम' के सातवें संस्करण का विमोचन किया गया।

इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन हिंदी विभाग की सहायक प्राध्यापक द्वितीया पेडणेकर के समन्वय में किया गया।

रेखाचित्र

- पूनम पालयेकर (SYBA)
- अनुजा सुतार (TYBA)
- दिव्येश पटेल (SYBSc)

कहानी लेखन

- शुभांगी फड़ते (TYBA)
- सुमैया खान (FYBA)
- वर्षा मिश्रा (SYBA)



काव्य प्रस्तुतिकरण

- हर्षित पांडे (FYBSc)
- अनमोल मिश्रा (FYBSc)
- सुमैया खान (FYBA)



वक्तृत्व

- शिवांग शिरोडकर (SYBSc)
- श्रुति घोणे (TYBA)
- अनमोल मिश्रा (FYBSc)

ग़ज़ल गायन

- श्रेता गावस (SYBSc)
- रिद्धि शेटगांवकर (TYBSc)
- गंदिता नार्वेकर (TYBA)



एकालाप

- श्रुति मेत्रे (SYBA)

5. महानाम 2024 (25 सितंबर 2024)

हरमल पंचक्रोशी शिक्षण मंडल के गणपत पार्सेकर शिक्षा महाविद्यालय के हिंदी विभाग ने 25 सितंबर 2024 को एक अंतर-महाविद्यालयीय प्रतियोगिता 'महानाम 2024' का आयोजन किया था। इस प्रतियोगिता में विभिन्न स्पर्धाएँ आयोजित की गई थीं। सेंट जेवियर्स महाविद्यालय, म्हापसागोवा के विद्यार्थी श्री. अमित निषाद (FYBA) ने इस प्रतियोगिता की 'यात्रा वृत्तचित्र' स्पर्धा में भाग लेकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और तीसरा स्थान प्राप्त किया। उनकी प्रस्तुति में यात्रा के अनुभव, स्थानों का जीवंत वर्णन और भावनात्मक अभिव्यक्ति का सुंदर संगम देखने को मिला। इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ न केवल विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करती हैं, बल्कि उनमें आत्मविश्वास, भाषाई दक्षता और साहित्यिक संवेदनशीलता भी विकसित करती हैं।



6. हिंदी सृजनोत्सव 2024 (1 अक्टूबर 2024)

हिंदी विभाग ने 1 अक्टूबर 2024 को इंस्टीट्यूट मिनेजिस ब्रागांजा, पणजी द्वारा आयोजित 'हिंदी सृजनोत्सव 2024' नामक राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया गया। इसमें महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिए विभिन्न हिंदी भाषा संबंधी प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, जैसे निबंध लेखन, भाषण, भजन, रेखाचित्र और कविता प्रस्तुति। इसका उद्देश्य हिंदी भाषा के उपयोग और महत्व को बढ़ावा देना तथा विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना है। इन प्रतियोगिताओं में भजन प्रतियोगिता में सुश्री. रिद्धि शेटगांवकर ने दूसरा और कविता प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिता में श्री. अनमोल मिश्रा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। कुल 15 महाविद्यालयों के बीच हुई इस प्रतियोगिता में सेंट ज़ेवियर्स महाविद्यालय के हिंदी विभाग ने समग्र रूप से प्रथम उत्तेजनपर पुरस्कार प्राप्त किया।



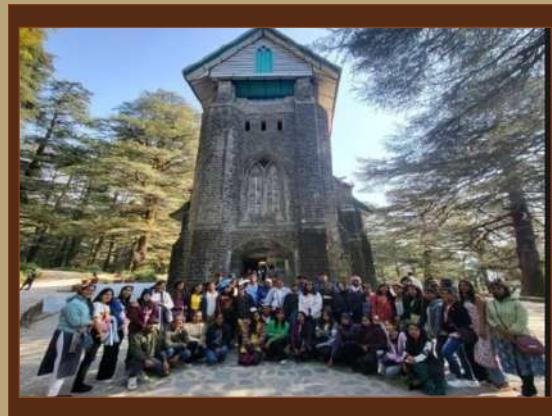
7. भारतीय शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम

सोसाइटी फॉर प्रमोशन ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एंड कल्वर अमंगस्ट यूथ (SPICMACAY) द्वारा सेंट ज़ेवियर महाविद्यालय, म्हापसा ने हिंदी, मराठी और कोंकणी विभागों के सहयोग से भारतीय शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम का आयोजन 08 अक्टूबर 2024 को सुबह 9:30 बजे महाविद्यालय के संगोष्ठी कक्ष में किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विश्वजीत मेस्त्री थे। वे गोवा के प्रसिद्ध गायन कलाकार और सेंट ज़ेवियर महाविद्यालय के पूर्व छात्र रहे हैं। कार्यक्रम में हिंदी विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. मैग्डालीन डिसूजा ने भारतीय शास्त्रीय संगीत के महत्व पर प्रकाश डाला। कोंकणी विभाग के सहायक प्राध्यापक सिल्वेस्टर वाज ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया तथा श्री विश्वजीत मेस्त्री ने भारतीय शास्त्रीय संगीत पर परिचय प्रस्तुत किया।



8. अध्ययन यात्रा (19 दिसंबर - 28 दिसंबर 2024)

हिंदी विभाग ने कोंकणी और मराठी विभाग के साथ मिलकर अमृतसर, धर्मशाला, कुल्लू और मनाली के लिए अध्ययन यात्रा का आयोजन किया। जिन स्थानों का भ्रमण किया गया, वे थे: अमृतसर (वाघा बॉर्डर, स्वर्ण मंदिर, जलियांवाला बाग), धर्मशाला (दलाई लामा मंदिर, सेंट जॉन चर्च, नड्डी गांव, युद्ध स्मारक, क्रिकेट मैदान, चाय के बागान), मनाली (झो पॉइंट, वशिष्ठ कुंड, हडिम्बा मंदिर, तिब्बती मठ), कुल्लू (वैष्णो देवी मंदिर, शॉल फैक्ट्री)। इस अध्ययन यात्रा के दौरान छात्रों ने अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कीं। उन्होंने जलियांवाला बाग में भारत के स्वतंत्रता संग्राम के बारे में सीखा, वाघा बॉर्डर के ऐतिहासिक महत्व को समझा, धर्मशाला के युद्ध स्मारक पर भारतीय सैन्य इतिहास और युद्धों में दिए गए बलिदानों के बारे में जाना। इसके अतिरिक्त, उन्होंने तिब्बती बौद्ध धर्म, तिब्बती संस्कृति, प्राचीन शिक्षाएँ तथा तिब्बती मठों में प्रचलित आचार-विचार और अनुष्ठानों का अध्ययन किया। इस यात्रा में कुल 42 छात्र और 8 शिक्षक सहभागी हुए।



9. 'मुगल युग में हिंदुस्तानी की भूमिका' विषय पर अतिथि व्याख्यान (24 जनवरी 2025)

हिंदी विभाग ने 24 जनवरी 2025 को दोपहर 12:30 से 1:30 बजे तक 'मुगल युग में हिंदुस्तानी की भूमिका' इस विषय पर डॉ. इमरे बंग्हा (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी) के व्याख्यान का आयोजन किया। डॉ. इमरे बंग्हा ने मुगल युग में हिंदुस्तानी की भूमिका और हिंदुस्तानी साहित्य लेखन की विविध धारा पर विचार रखें। डॉ. बंग्हा ने बताया कि कैसे यह साहित्यिक विविधता समाज के विभिन्न वर्गों की संवेदनाओं और दृष्टिकोणों को अभिव्यक्त करती थी। इस व्याख्यान में बी.ए. प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष, तृतीय वर्ष के लगभग 30 छात्रों ने भाग लिया। शिक्षकों में डॉ. रमिता गुरुव, डॉ. मैडालीन डिसूजा, प्रा. धर्मा चोडणकर, प्रा. सिल्वेस्टर वाज़, प्रा. सलीम गड़ेद, प्रा. प्रीतम सालगांवकर और प्रा. क्षितिजा पेडणेकर उपस्थित रहे।



10. मूल्यवर्धित पाठ्यक्रम : देवनागरी टंकण (19 अगस्त 2024 से 10 जनवरी 2025)

देवनागरी टंकण पर मूल्यवर्धित प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम 19 अगस्त 2024 से 10 जनवरी 2025 तक आयोजित किया गया। कुल 16 विद्यार्थियों ने पंजीकरण किया, जिनमें से 12 विद्यार्थियों ने 30 घंटे का पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा किया। प्रतिभागियों ने डॉ. रमिता गुरव के मार्गदर्शन और प्रशिक्षण से देवनागरी टायपिंग का कौशल प्राप्त किया।

इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को देवनागरी लिपि में तेज़ और सटीक टायपिंग का प्रशिक्षण देना था, ताकि वे शैक्षणिक, प्रशासनिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में डिजिटल माध्यमों पर दक्षता से कार्य कर सकें। प्रतिभागियों ने देवनागरी टायपिंग के साथ-साथ कंप्यूटर पर सही कीबोर्ड लेआउट, टायपिंग स्पीड बढ़ाने की तकनीकें और प्रूफरीडिंग कौशल भी सीखा।

इस प्रकार, यह मूल्यवर्धित पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को न केवल भाषा और तकनीकी कौशल में दक्ष बनाने में सहायक रहा, बल्कि उन्हें डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार भी किया।

सफल विद्यार्थियों को प्रसिद्ध हिन्दी लेखक श्री गोविन्द मिश्र के हाथों 24 जनवरी 2025 को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।



11. अतिथि व्याख्यान: 'रचनाकार की रचनात्मकता'

(04 फरवरी 2025)

हिन्दी विभाग द्वारा प्रसिद्ध लेखक श्री गोविंद मिश्र का व्याख्यान 04 फरवरी 2025 को 11:45 से 12:45 बजे तक आयोजित किया गया। गोविंद मिश्र ने साहित्य के महत्व पर प्रकाश डाला और कैसे साहित्य हमें समाज और लोगों को जानने में मदद करता है इसपर अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने अपने द्वारा लिखी कहानियों के विभिन्न पहलुओं पर भी विद्यार्थियों से चर्चा की। इस व्याख्यान में बी.ए. प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष और तृतीय वर्ष के विद्यार्थी उपस्थित थे। 'देवनागरी टायपिंग कोर्स' में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को श्री गोविंद मिश्र के हाथों प्रमाणपत्र भी वितरित किए गए। इस व्याख्यान में डॉ. रमिता गुरुव, डॉ. मैगडालीन डिसूजा, प्रा. सिल्वेस्टर वाज़, प्रा. सलीम गडेद, प्रा. प्रीतम सालगांवकर और प्रा. क्षितिजा पेडणेकर उपस्थित थे।



१२. भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम ‘गोवा की पारंपरिक कला कावी’ (२७ फरवरी से ०५ मार्च २०२५)

हिन्दी विभाग और आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणाली पर ३० घंटे का ‘गोवा की पारंपरिक कावी आर्ट’ पर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। यह पाठ्यक्रम २७ फरवरी २०२५ से ५ मार्च २०२५ तक चला। प्रतिभागियों को भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा और पारंपरिक कला के महत्व से परिचित कराया गया। उन्हें ‘कावी आर्ट’ का प्रत्यक्ष प्रशिक्षण सुश्री. समृद्धि केरकर (लेखिका, कलाकार और ईको-कल्वर कार्यकर्ता) द्वारा दिया गया। २० प्रतिभागियों ने यह पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण किया। समापन दिवस ५ मार्च २०२५ को डॉ. रामिरो लुइस और सुश्री समृद्धि केरकर के हाथों प्रमाणपत्र वितरित किए गए। ६ मार्च २०२५ को महाविद्यालय के लॉबी में प्रतिभागियों द्वारा निर्मित कावी कला प्रदर्शनी आयोजित हुई, जिसे सभी ने सराहा।



13. पूर्व छात्र अतिथि व्याख्यान : 'स्वातंश्चोत्तर हिंदी कहानी' (24 मार्च 2025)

हिंदी विभाग ने 24 मार्च 2025 को 10:45 बजे पूर्व छात्र सहायक प्राध्यापक सुश्री दीपाली सुतार का 'स्वातंश्चोत्तर हिन्दी कहानी' इस विषय पर व्याख्यान आयोजित किया। विषय: 'स्वातंश्चोत्तर हिन्दी कहानी'। इस व्याख्यान में बी.ए. द्वितीय वर्ष और तृतीय वर्ष के विद्यार्थी उपस्थित थे। चर्चा किए गए प्रमुख विषय कुछ इस प्रकार थे विभिन्न हिंदी कहानी आंदोलन, स्वातंश्चोत्तर कहानी का स्वरूप, हिंदी कहानी में विविध विमर्श आदि। इस व्याख्यान में डॉ. रमिता गुरुव, डॉ. मैगडालीन डिसूजा (संयोजक), प्रा. सलीम गडेद, प्रा. प्रीतम सालगांवकर और प्रा. क्षितिजा पेडणेकर उपस्थित थे। लगभग 24 विद्यार्थियों ने इस व्याख्यान में सहभागिता की।



कल्पना से अभिव्यक्ति तक...✍

लेखन वह कला है जो विचारों को शब्दों में और शब्दों
को प्रभाव में बदल देती है।

काग़ज पर उतरे शब्द वही कह पाते हैं जो मन कहना
चाहता है।

जब शब्द भावनाओं से मिलते हैं, तब रचना जन्म लेती
है।

-अज्ञात-

रुठना

रुठा हूँ मैं,

इस समाज से जो खामोश खड़ा है।
ज़ुल्म देखकर भी न जाने क्यों जड़ हुआ है।

रुठा हूँ मैं,

वक्त से जो रुका हुआ है।
उनके लिए जो उम्मीदों से बंधे हुए हैं।

रुठा हूँ मैं,

सच से जो बिकने लगा है।
इंसाफ से जो मुँह मोड़ने लगा है।

रुठा हूँ मैं,

रिश्तों से जो झ़ठे निकले
वफ़ा के नाम पर जिन्हींने खंजर भोंके हैं।

रुठा हूँ मैं,

उन मंदिरों और मस्जिद से,
जहाँ इबादत नहीं इंसान बाँटे जाते हैं।

रुठा हूँ मैं,

उस कानून से जिसका बिकता है ईमान।
जिसका न कोई विधान है।

रुठा हूँ मैं,

सत्ता से जो अंधी है।
रिश्वत के ज़ंजीरों में जो जकड़ी हैं।

रुठा हूँ मैं,

उस अदालत से जिसने,
मासूम बेज़उबान कुत्तों को ठहराया मुजरिम है।

रुठा हूँ मैं,

उस इंसान से जिसने,
अठारह महीने की बच्ची के बलात्कार पर कहा,
की ताली एक हाथ से नहीं बजती है।

रुठा हूँ मैं,

इस इंसानियत से,
जिसने सुलाया हर एक का ज़मीर है।

कृ. सबा अंसारी
तृतीय वर्ष कला

हिंदी हमारी पहचान, हमारा अभिमान...

भारत १३० करोड़ से अधिक निवासियों का विशाल देश है, जहाँ १६०० से भी अधिक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। इतनी भाषाई विविधता के बावजूद, वैश्विक मंच पर भारत की पहचान प्रायः हिंदी से ही होती है। हिंदी एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीयता का चेहरा और हमारी सांस्कृतिक धरोहर की आत्मा है।

युवा पीढ़ी को हिंदी से जोड़ने में हिंदी सिनेमा और बॉलीवुड इंडस्ट्री का विशेष योगदान रहा है। गीत, संवाद और कहानियाँ युवाओं के दिल तक पहुँच कर उन्हें हिंदी बोलने और समझने के लिए प्रेरित करती हैं। आज भारत में लगभग ४३.६३% लोग हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलते हैं। सोशल मीडिया पर हिंदी मीम्स और रचनात्मक कंटेंट ने भी इस भाषा को नया जीवन दिया है, जिससे यह नई पीढ़ी के बीच और लोकप्रिय हो गई है।

हिंदी साहित्य में भी हर आयु वर्ग और हर स्वाद के लिए रचनाओं का विशाल खजाना उपलब्ध है। कविताओं से लेकर उपन्यासों तक, हास्य से लेकर गहन दर्शन तक। यही नहीं, हिंदी दुनिया भर में बसे भारतीयों को जोड़ने वाली एक भावनात्मक डोर का काम करती है।

भारत में किसी भी सरकारी नौकरी में कार्य करने के लिए हिंदी का ज्ञान आवश्यक है। यह केवल रोजगार ही नहीं, बल्कि आत्म-सम्मान का विषय भी है। इसीलिए हमें हिंदी को केवल पढ़ना नहीं, बल्कि जीना चाहिए, बातचीत में प्रयोग करना चाहिए, साहित्य पढ़ना चाहिए और इसे गर्व से अपनाना चाहिए।

हिंदी हमारे विचारों को अभिव्यक्त करने का सबसे स्वाभाविक माध्यम है। जब हम हिंदी में सोचते हैं, बोलते हैं और लिखते हैं, तो हम अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं और अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाते हैं। तो आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम हिंदी को केवल पढ़ेंगे नहीं, बल्कि इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाएँगे। हम इसे गर्व से बोलेंगे, लिखेंगे और अगली पीढ़ी को भी इसका महत्व समझाएँगे।

कु. अंशिका ठाकुर
द्वितीय वर्ष कला

जाने से पहले

जाने से पहले देखा मुँडकर मैंने
तुम तो क्या परछाई भी नहीं थी तुम्हारी
जाने से पहले ताकती रही
दीवार पर टंगी हुई तस्वीरें
मैं उनमें तो थी मगर तुम्हारी आँखों में नहीं

रह गए मायूस ही हम
मेरे और तुम्हारे जन्मदिन पर
तुमने कहा "अब हो गए बड़े हम"
बड़े होने का मतलब
अरसे बाद थे समझों हम
बस तब तक पुल कोशिशों के
बांधते रह गए हम

निकलते समय देखा दहलीज से बाहर
घोर अँधेरे में डूबी झाड़ियों और पहाड़ों को
डरावनी दीवारों, खेतों, मेड़ों और
उफनते हुए समंदर की लहरों को
सहेमकर थे डाले मैंने
अपने डगमगाते क़दम बाहर
घने अँधेरे में पत्तों के बीच से
दूज का चाँद चमचमाया
क्षण भर विराम देकर देखा मैंने उसको
विशाल नभ में असंख्य तारों के बीच
वह भी था अकेला
सबको रोशन करता, और तारों को मुँडकर देखता

प्रा. प्रियंका पेडणेकर
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग

हिंदी: राष्ट्रीय एकता और वैश्विक पहचान की ताकत

हिंदी भाषा केवल एक संवाद का साधन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और सभ्यता की धड़कन है। यह भाषा भारत की आत्मा को अभिव्यक्त करती है और हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, वहाँ हिंदी एक सेतु के रूप में कार्य करती है जो विभिन्न भाषाएँ और सांस्कृतिक क्षेत्रों को जोड़कर राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाती है। 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया। यह दिन केवल भाषाई सम्मान का प्रतीक नहीं, बल्कि स्वतंत्र भारत की उस दूरदर्शी सोच का भी परिचायक है, जिसने एक ऐसी भाषा को चुना जो बहुसंख्यक भारतीयों द्वारा समझी जाती थी और जो पूरे देश के लिए एक सामान्य संवाद माध्यम बन सकती थी। हिंदी दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हमें अपनी मातृभाषा और राजभाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

हिंदी साहित्य का इतिहास अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। संत, रीतिकालीन और आधुनिक युग के कवियों और लेखकों ने हिंदी को ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। कबीर, तुलसीदास, सूरदास, प्रेमचंद और महादेवी वर्मा जैसे रचनाकारों ने हिंदी साहित्य को विश्वस्तरीय मान्यता दिलाई। उनका साहित्य केवल सौंदर्यबोध का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता और राष्ट्रनिर्माण का माध्यम भी रहा है। इस प्रकार हिंदी ने भारतीय समाज में विचार और चेतना का संचार किया और स्वतंत्रता संग्राम में भी लोगों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वैश्वीकरण के इस युग में हिंदी की पहचान केवल राष्ट्रीय स्तर तक सीमित नहीं रही। आज हिंदी अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी अपनी अलग छाप छोड़ रही है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों और संस्थानों में हिंदी का अध्ययन कराया जा रहा है। विदेशों में बसे भारतीय समुदाय ने हिंदी को अपनी सांस्कृतिक पहचान के रूप में जीवित रखा है। मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद, सूरीनाम, नेपाल और अन्य देशों में हिंदी बोलने वालों की संख्या लाखों में है। इससे यह स्पष्ट होता है कि हिंदी अब केवल भारत की नहीं, बल्कि विश्व की भी भाषा बन चुकी है। डिजिटल युग में हिंदी का प्रभाव और भी बढ़ गया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, यूट्यूब, पॉडकास्ट, ब्लॉगिंग और समाचार पोर्टल पर हिंदी सामग्री की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ और तकनीकी प्लेटफ़ॉर्म अब हिंदी को प्राथमिकता दे रहे हैं ताकि अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचा जा सके। इससे हिंदी न केवल आम लोगों की भाषा बनी हुई है, बल्कि व्यवसाय और तकनीक की भी एक महत्वपूर्ण भाषा बन रही है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी भी राष्ट्र की शक्ति उसकी भाषा और संस्कृति में निहित होती है। यदि हम अपनी भाषा का सम्मान नहीं करेंगे, तो अपनी सांस्कृतिक पहचान भी खो देंगे। इसलिए हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ हमें इसे अपने जीवन में अपनाना चाहिए। घर में, विद्यालय में, कार्यस्थल पर और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर हिंदी का प्रयोग करके हम आने वाली पीढ़ियों को इसकी महत्ता समझा सकते हैं।

कु. सिद्धि पटेल
द्वितीय वर्ष कला

कठपुतली

उसकी आँखें मुझसे टकराई
सिहर उठा मैं,
साँसे थरथराने लगी
मैंने खुद को भीड़ में तब्दील पाया।

किंतु अश्रु मिश्रित चित्कार
टटोलने लगो सत्य की परिभाषा,
न्याय का तराजू पर तौलता ईमान,
मूल्यों का महत्व और बेतरतीब
संस्कारों का औचित्य,
जिसे विश्लेषित करते ही
तालियों से गूंज उठा था सभागार।
इच्छाओं तथा अपेक्षाओं के चेहरों
ने कितना महान बना दिया था मुझे।

हल्की सी मुस्कान ने मेरा चेहरा धोया,
माथे पर उठे शिकन को धीरे से दबाया।
अशांत मन के लिए शब्द फूटे
"बेचारा असहाय मन खामखाँ घबरा जाता है।"
बेचारा मन मौन कहाँ रहता?

उसने संवाद साधा
चुप क्यों हो संगी?"
न्याय और इंसानियत की बातें आज क्यों नहीं ?
मैं निरुत्तर! किंतु उत्तर की तलाश में,
साधना चाहता था संवाद अपने आपसे।
जिससे बैठाई जा सके परिभाषाएँ अपने सिद्धांत में,
नज़रे फिरी भीड़ की ओर,
प्रश्नचिह्न से भरे चेहरे
दे रहे थे चित्त की सांत्वना की सौगात,

अचानक, भीड़ को चीरते हुए,
ठीक बीचों-बीच से सत्य, न्याय, मूल्य के चेहरे,
आज दर्शक बन खोज रहे थे
औचित्य अपने अस्तित्व का मुझमें !!

मैंने आँखें बंद करना ठीक समझा।
पैरों ने स्वचालित रफ्तार पकड़ ली,
और पाया कि मैं तो काठ की
उस कठपुतली के समान हूँ
जिसकी डोर किसी बाज़ीगर के हाथ सुरक्षित हैं।
जो मुझे ही नहीं अपितु
विचारों को भी नियन्त्रित कर रहा है।

प्रा. सलीम गडेद
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग

ज्ञान की डगर, सपनों का संगम,
हर दिन नया, बढ़ते रहें कदम।

बढ़ते कदम...